International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 888-889

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 888-889
www.allresearchjournal.com
Received: 18-11-2016
Accepted: 24-12-2016

भागवत मंडल
शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
भागवत मंडल
शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

मैथिली उपन्यास मे शैलीक स्थानः एक अध्ययन

भागवत मंडल

सारांशः
उपन्यासक पाञ्चम प्रमुख तत्व शैली थीक। ई अंगरेजीक स्टाइल (जलसम) शब्दक पर्यायवाची थीक। जकर उत्पति 'स्टाइल्स' शब्द सँ भेल अछि। अभिव्यजनाक प्रकारकें शैली कहल जाइत अछि। मनुष्यक मोन मे जे विभिन्न प्रकारक भावना उत्पन्न होइत अछि। ओकरा व्यक्त करबाक लेल भाषाक प्रयोग कयल जाइत अछि। भावनाकें भाषा मे व्यक्त करबाक विभिन्न साधन होइत अछि। आ भाषा मे अभिव्यक्ति देबाक विभिन्न प्रकार। साहित्यक विभिन्न रूप, उपन्यास, नाटक, लघुकथा प्रभृति। जे भाव व्यक्त करबाक विभिन्न प्रकार होइत अछि। भावना व्यक्त करबाक लेल लेखक विभिन्न शिल्प ओ शैलीक प्रयोग करैत अछि। कोनो वस्तुक वर्णन मे निश्चित क्रम योजना रहैत अछि शैली शब्द सँ वस्तु एवं विषयक बोध होइत अछि। एहि वर्णनक क्रम योजना कें शैली कहल जाइत अछि। रूप कोनो वस्तुक बिम्ब रूप होइत अछि। शैलीक अन्तर्गत शब्दक चयन, वर्णन, विन्यास, वाक्य रचना आदि अबैत अछि। शैली अनेक तत्वक समन्वित रूप होइत अछि। जतेक प्रकारक रचना ओतेक प्रकारक शैली होइत अछि। शैली विषयकें व्यक्त करैत अछि। शैली में परिवर्तन नहि होइत अछि। उतम शैली निषेधात्मक नही होइत अछि। उपन्यास मे शैलीक महत्वपूर्ण स्थान होइत अछि।

प्रस्तावनाः
उपन्यास मे शैलीक महत्वपूर्ण स्थान होइत अछि। वर्ण्य विषय कें अनुसार विभिन्न शैलीक प्रयोजन होइत अछि। यातायातक सुविधाक कारणें विभिन्न देशक संस्कृति एवं घटनाक प्रभाव सँ कोनो साहित्य अपनाकें फराक नहि राखि सकैत छथि। ओहि सबहक प्रभाव एक साहित्य सँ दोसर साहित्यपर परैत छइ। शैलीक सम्बन्ध वर्ण्य विषयक संग स्वाभाविक ओ साश्वत होइत अछि। शैलीक अध्ययन करैत काल दोसर प्रकारक अध्ययनक अधिक प्रयोजन रहैत छइ।
उपन्यासक लेल शैली अलंकरण नहि अनिवार्य तत्व होइत अछि। पात्रक पारस्परिक सम्बन्ध कें लेल शैली अत्यन्त आवश्यक उपादान मानल जाइत अछि।
लवाँक वस्तु आ रुपक सम्बन्ध सँ शैलीक अधिक महत्व दैत छथि। जेना विभिन्न लेखक एकहि विचारकें विभिन्न प्रकारें व्यक्त करैत छथि। कोनो आलेख देखला सँ हम ई अन्दाज लगा सकैत छी, जे ई अमुक व्यक्तिक लेख छी।
शैली मनुष्यक प्रतिच्छाया होइत अछि। जहिना मनुष्य अनेक प्रकारक गुण सँ युक्त रहैत अछि, ठीक तहिना ओकर भाषा एवं शैली रहैत छइ। शैली लिखवा एवं बजबाक एक नित्य निरंतर विधि होइत अछि। शैली मनुष्यक रूचिकें प्रदर्शित करैत अछि।
शैली पर लेखक क' पूर्ण प्रभाव, रुचि, संस्कार एवं वातावरणक प्रभाव परैत छैक। भाषाकें सुबोध एवं लोकोक्तिक प्रयोग करैत, रचनाकें विविध गुण सँ परिपूर्ण राखब लेखककें लेल आवश्यक भए जाइत छथि।
हिन्दी साहित्यक उपन्यासकार कहैत छथि, जे शैली उपन्यासक ओ वाणी थकि जे विषय कें व्यक्त करैत अछि। शैली विचार रूपी शरीरक त्वचा होइत अछि। एहिमे कोनो परिवर्तन नहि होइत अछि। कला मे शैलीक व्यक्तित्व रहैत अछि। शैलीक आदर्श स्वभाविक होइत अछि। आ वास्तविकता ओकर माध्यम शैलीक द्वारा पात्र अपन मनोभाव व्यक्त करैत अछि। उपन्यासकार एकरा द्वारा वर्णन परिस्थिति एवं घटनाक विश्लेषण करैत छथि। शैलीक अन्तर्गत शिल्पक अध्ययन सेहो होइत अछि।
शैली व्यक्तित्वक शब्दक अभिव्यक्ति अछि। एकरा अन्तर्गत पाठक कें मुग्ध करबाक साधन सेहो होइत अछि। एकर सामान्य अर्थ विचार क्रम एवं गति होइत अछि। विभिन्न शैलीक अन्तर्गत उपन्यास उतम, मध्यम एवं अन्य पुरुष मे लिखल जाइत अछि। डायरी शैलीक उपन्यास सेहो उतम पुरुष मे लिखल जाइत अछि। कथाक हवाक तेसर शैली मध्यम पुरुषक अछि। शैली उपन्यासक आवरण नहि अपितु अभिव्यंजनाक प्रकार होइत अछि। शैली कें वस्तु सँ अलग नहि कयल जा सकैत अछि।

विख्यात उपन्यासकार हार्डिक शैली पर एक आलोचकक कहब छनि जे– ''हास्य, चरित्र–चित्रण, प्राकृतिक दृश्य कथाकें चमत्कार पूर्ण प्रारंभ एवं बाक् पटुता पूर्ण शैली सभ हार्डिक साधन छनि। जकरा कल्पनाक द्वारा हमरा सभक हृदयकें वशीभूत कए लैत अछि।

आधुनिक समयक विश्रृंखल जटिल मनोभाव वर्णनक हेतु उपन्यासकार कें विभिन्न मनोविश्लेषण शैलीक स्थूल सँ सूक्ष्म दिशा में बढ़बाक प्रयास मे उपन्यासकार विभिन्न मनोविश्लेषण प्रणालीक अनुसरण करैत अछि। जाहिमे तीन प्रमुख अछि। पूर्वदिप्ति, चेतनाप्रवाह, आ कालविपर्यय।

पूर्व दीप्ति उपन्यास मे पात्रक जीवनक घटनाक वर्णन रहैत अछि। एकर अवधि छोट रहैत अछि। मुदा एहि अल्प अवधि मे अतीतक विभिन्न घटनाक अवधि रहैत अछि।

चेतना प्रवाह मे मनोभावक वर्णन अधिक सूक्ष्मता सँ कयल रहैत अछि। ई विशेष प्रभावपूर्ण होइछ। उपन्यासक कला मे प्रौढ़ता संग–संग ओकरा अपना पैर पर ठाढ़ रहबाक शक्ति अबैत गेलै।

मनुष्यक भावनाकें व्यक्त करबा मे शब्दक अर्थ रहैत अछि। ते चेतना प्रवाहक अन्तर्गत विश्व साहित्यक उपन्यास मे एहन शब्दक प्रयोग लेखक कयलनि, जे शब्द कोषक अस्तित्वमे नही अछि।

एहि तरहें देखल गेल अछि, जे शैलीक उपन्यासक क्षेत्र मे शैलीक महत्वपूर्ण स्थान अछि। एकरा उपन्यासक प्रधान अंग मानल गेल अछि।

मैथिली उपन्यासक इतिहास बहुत अल्प समयक अछि। मुदा एहि कम समय मे लिखल गेल मैथिली उपन्यास मे विभिन्न प्रकारक शैलीक प्रयोग भेल अछि। आरम्भिक उपन्यासक शैली मे कृत्रिमताक रूप सर्वत्र देखबा मे अबैत अछि।

पाठककें सम्बोधित कय किछु कहबाक शैलीक प्रयोग श्री हरिमोहन झाक रचना मे देखल जाइत अछि। पाठक सँ ओ स्वयं कहैत छथि– ''पाठक वृन्द, एकमन सूझए बन्दा बुझए। कतहु घूटर झा तँ देखा दिअ ओएह देखिअनु हाथ मे नोसिदानी लेने हँसि–हँसि घटकराज चुन्नी झा सँ गप्प कए रहल छथि।''

माधवी–माधव उपन्यासक वर्णन शैली मे त्रुटि देखल जाइत अछि। नव सभ्यताक बाबू लोकनि लचीली छड़ी घुमबैत, रिस्ट–वाच, चमकबैत पम्पू शू मचकबैत अपन सुसज्जित बेशक बहार देखबैत, हेंड़ मे हेड़ायल, चलैत, झुकैत, बिहुँसैत, केओ रमना दिस तँ केओ टिशन दिस कें बिदा भेलाह।

कन्यादानक लेखक स्वभाविक वर्णन शक्तिक कारणें हमरा सबहक ध्यान आकृष्ट करैत अछि। हरिमोहन झा पहिल उपन्यासकार छथि जनिक रचना, शिल्प एवं विषय दुनू दृष्टि सँ आकर्षक अछि।

एहन–एहन स्थान पर भाषा प्रवाहपूर्ण एवं वर्णन आकर्षक भए जाइत अछि– "एतबहि मे झुनिया माय हन हन, पटपट करैत पानि ल पहुचि गेली। पाञ्चे मिनट मे की बाजल ठेकान नहि। तखने कोनो अज्ञात व्यक्ति सँ झगरा करै लगलीहसखमे सख मिरचाइओक सख। हम दिन भरि खटैत रहि, तरबाक तज्जीने रहए–आ ओम्हर निचिन्त सुतथि पदमावती बहुरिया। ताहि पर कहनाई जे माथा मे दर्द होइए अहा–हा–हा। छबि ने छटा दालि बड़ खटा। देहो जडैए।

वर्णात्मक शैलीक प्रयोग करबा मे यात्री जीक अन्यतम स्थान छनि। जे पारो एवं नतुरिआ उपन्यास मे देखल जाइत अछि। मोजफ्फरपुर आ पटना कें कतेको होटल मे चतुर्भुज बारह साल धरि काज क' चारि सयटाका जमा कयलनि आ ओहि टाकाक बदौलत ओ दुलहा बनलाह।

भाषाक दृष्टि सँ कन्यादान धरि मैथिली गद्यक प्रौढ़तम रूपक दर्शन होइत अछि। मैथिलीक ऐतिहासिक उपन्यासकार ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपदम्' सेहो विद्यापति उपन्यासमे एहि रीतिक अनुसरण कयलनि अछि।

निष्कर्ष:

मिथिलाक विभिन्न उपन्यास कें देखला सँ स्पष्ट अछि। जे कला रूपक प्रतिष्ठाक लेल शैलीक प्रयोग भेल अछि। जाहि मे कुमार प्रमुख अछि। शैलीक दृष्टि सँ पारो उपन्यासक महत्वपूर्ण स्थान अछि। यात्री जीक विशेषताक परिचय नवतुरिया उपन्यास मे सेहो भेटैत अछि। एहि तरहें वर्णनक रूप मे मैथिली उपन्यास मे शैलीक महत्वपूर्ण स्थान देखल गेल अछि।

संदर्भ :

1. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ. अमरेश पाठक
2. मैथिली साहित्यक इतिहास– डॉ. दुर्गानाथ झा ''श्रीश'', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा
3. मैथिली उपन्यासक विकास– अशोक 'अविचल' (संपादक)
4. मैथिली उपन्यास आ उपन्यासकार– भूपेन्द्र कुमार चौधरी, प्रकाशन ग्रन्थालय, दरभंगा